श्री भैरव जी की आरती

जय भेरव देवा प्रभु जय भेरव देवा। जय काली और गौरा देवी कृत सेवा॥ जय भेरव देवा प्रभु जय भेरव देवा॥

तुम्ही पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक । भक्तों के सुख कारक भीषण वपु धारक ॥ जय भैरव देवा प्रभु जय भैरव देवा॥

वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी ।

महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी ॥

जय भैरव देवा प्रभु जय भैरव देवा॥

तुम बिन सेवा देवा सफल नहीं होवे ।
चौमुख दीपक दर्शन सबका दुःख खोवे ॥
जय भैरव देवा प्रभु जय भैरव देवा॥

तेल चटकि दिध मिश्रित भाषाविल तेरी । कृपा करिये भैरव करिये नहीं देरी ॥ जय भैरव देवा प्रभु जय भैरव देवा॥

पाव घूंघरु बाजत अरु डमरु डमकावत । बटुकनाथ बन बालकजन मन हरपावत ॥ जय भेरव देवा प्रभु जय भेरव देवा॥ बदुकनाथ की आरती जो कोई नर गावे । कहे धरणीधर नर मनवांछित फल पावे ॥ जय भैरव देवा॥

